In the Court of Sessions Judge,Merta [Nagaur]Rajasthan

[Oldest Targeted case no: 21]

Crl. Appeal No: 22/2020

<u>In the matter of:</u>

Amarchand S/o: Jainarayan,Age-45 years R/o: Dugastau Tehsil Jayal, Nagaur [Rajasthan]	 Appellant

Vs

1. State of Rajasthan Through It's Public Prosecutor, Merta (Nagaur) [Rajasthan]	सत्यमेव जयते राजस्थान सरकार Respondent no.1
2. Narsidas S/o: Sohandas, Age-51 years	 Respondent no.2
3. Bhugandas S/o: Sohandas, Age-54 years	 Respondent no.3
4. Omprakash S/o: Karandas @ Ramchandra, Age-51 years	 Respondent no.4

5. Dwarak prasad S/o:Jagdish Prasad Age-48 years	 Respondent no.5
6. Ramniwas S/o:Sohan Dass Age-48 years	 Respondent no.6
7. Bhanwri Devi Wife of Dohandass Age-76 years **<u>All R/o:</u>** Dugastau, Tehsil:Jayal, Nagaur [Rajasthan]	 Respondent no.7

Present: Shri Satydev Sandu for Appellant
Shri Abhimanyu Sharma PP for Respondent no.1
Shri, Mahendra Choudhary for Resp.no.2 to Resp.no.7

13.3.2026 **<u>O R D E R</u>**

1. This Order will dispose off the instant Appeal, which has been filed feeling aggrieved by the Order dated 21.10.2019 passed by the Court of Ld.Gram Nyayalaya, Jayal [Nagaur] in Case No:274/2017 titled as State of Rajasthan Vs. Narsidass etc. whereby the the Ld. Trial Court acquitted the accused persons- Narsidass, Bhugandass, Omprakash, Dwarka prasad, Ramniwas, Bhanwri on the ground that the Prosecution has not been able to prove the case beyond reasonable doubts & thus, acquitted them for alleged offences u/s. 143,427,448 & 504 I.P.C in FIR No:80/2017 PS:Jayal [Nagaur].

2. That during the course of trial before Ld. Trial court, the testimony of following witnesses **[PW:1 to PW:10]** were go recorded:-

- PW:1/Amarchand [Complainant],
- PW:2/Sohanlal [Witness to Ex:p-3,Naksha-Mauka]
- PW:3/Bhagwanraml [Witness to Ex:p-3,Naksha-Mauka]
- PW:4/Sahdev [Turned-Hostile]
- PW:5/Suresh [Turned-Hostile]
- PW:6/Jagdish [Turned-Hostile]
- PW:7/Ramniwas [Turned-Hostile]
- PW:8/Sohanlal [I.O.]
- PW:9/Raghunath [Turned-Hostile]
- PW:10/Dharmendra [plot owner who sold the plot]

3. That the following documents **[Ex:P-1 to Ex:P-10**] were marked as Exhibit before Ld. Trial court as under:-

- Ex:P-1/Complaint
- Ex:P-2/Chak F.I.R.
- Ex:P-3/Naksha-Mauka
- Ex:P-4/161 Cr.P.C. Statement of Sahdev
- Ex:P-5/161 Cr.P.C. Statement of Suresh
- Ex:P-6/161 Cr.P.C. Statement of jagdish
- Ex:P-7/161 Cr.P.C. Statement of Ramniwas
- Ex:P-8/161 Cr.P.C. Statement of Raghunath
- Ex:P-9/Certified Copy of Sale Deed
- Ex:P-10/Sale Deed dt. 4.9.2017

4. That the Defense has got examined as **DW:1/Sohandan** & got marked **Ex:D-1 to Ex:D-2** before Ld. Trial court as under:-

- Ex:D-1/Certified copy of Bahi
- Ex:d-2/Agreement

Brief factual backdrop

5. The succinct facts necessary for resolving the issues involved in this case as per complainant/Amarchand is that in the midnight of 14.9.2017 at his owned & purchased residential house/plot situated at Dugastau Village area the accused persons-Narsidass, Sohandass, Ramniwas, BhuganDass Bhiyadass, Omdass, Dwarika prasad, Suresh Dass, Mohandass, Rakesh, Monudass, Akhil & Priyasudass broke upon the wall & house gate of complainant and entered therein in their Tractor kept Taiyan and tied their cattle and on objecting thereof, they started chasing the complainant to beat him.

6. This plot was alleged to have been purchased by complainant/Amarchand from one-Dharmendra. That a telephonic call was made by the complainant to PS:jayal at about 2 pm and thereafter on 15.9.2017 in the morning Rachna, Kamla. Bhanwri & wife of Sohandass & other ladies were found to be cutting grass in the field/plot of complainant & on objecting they hurled abuses. Thus, a case u/s. 143,447,427 & 504 I.P.C in FIR No:80/2017 PS:Jayal [Nagaur].

7. The Ld. Trial court framed charges u/s.147[Punishment for rioting], 427[Mischief causing damage], 448 [House trespass] & 504[intentional insult with intent to provoke breach of peace] I.P.C & evidence was got recorded therein.

<u>Findings of Ld. Trial court:</u>

8. That the Ld. Trial court took returned the findings as under:-

> "हस्तगत प्रकरण में परिवादी द्वारा प्रदर्श पी टाईपशुदा रिपोर्ट में अपने साथ गाली-गलौच किये जाने के संबंध में भी तथ्य दर्ज किये गये हैं। **भारतीय दण्ड संहिता की धारा 504 के तहत अपराध के गठन के लिए आवश्यक है कि किसी व्यक्ति द्वारा अन्य व्यक्ति को इस आशय से गालियां निकालकर अपमानित किया जावे कि प्रकोपन्न के परिणामस्वरूप वह कोई अपराध कारित करने या लोकशांति भंग करे। हस्तगत प्रकरण में न्यायालय के समक्ष ऐसी कोई भी स्थिति नहीं आई है, जिससे यह दर्शित हो कि अभियुक्तगण की ओर से परिवादी को इस आशय से गालियां निकाली गई हो कि वह प्रकोपन्न के परिणामस्वरूप अन्य अपराध कारित करने या लोकशान्ति भंग करें।** न्यायालय के समक्ष केवल साक्षी पी.ड. 1 ने परिवादी व उसकी पत्नी व माता को गालियां निकाले जाने की स्थिति प्रकट की है और केवल गाली निकालना भारतीय दण्ड संहिता की धारा 504 के तहत दण्डनीय अपराध को घटित नहीं करता है। ऐसी स्थिति में साक्ष्य के अभाव में यह तथ्य भी प्रमाणित नहीं हुआ है कि अभियुक्तगण ने धारा 504 के तहत दण्डनीय अपराध किया हो।
>
> **हस्तगत प्रकरण में घटनास्थल पर परिवादी का कब्जा होना भी दर्शित नहीं हुआ है। साथ ही अभियुक्तगण द्वारा परिवादी की सम्पति में रिष्टी किया जाना भी प्रमाणित नहीं हुआ है** और अभियुक्तगण द्वारा भारतीय दण्ड सहिता की धारा 504 के तहत दण्डनीय अपराध कारित किया जाना भी प्रमाणित नहीं हुआ है। **हस्तगत प्रकरण में अभियुक्तगण द्वारा बल्वा कारित करने का भी आरोप है और न्यायालय के समक्ष साक्षी पी.ड. 1 ने ऐसी कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं की है जो इस तथ्य को प्रमाणित करती हो कि अभियुक्तगण ने विधिविरूद्ध जमाव का गठन कर या उसका सदस्य होते हुए ऐसे जमाव के सामान्य आशय के अग्रसरण में बल या हिंसा का प्रयोग किया हो। ऐसी स्थिति में अभियुक्तगण के विरूद्ध बल्वा का अपराध कारित किये जाने का तथ्य भी सन्देह से परे प्रमाणित नहीं हुआ है**।"

9. In appeal, Ld. Counsel for appellant submits that all the oral & documentary evidence has been misread & misconceived by the Ld. Trial court while acquitting the accuses persons from charges u/s.147[Punishment for rioting], section 427[Mischief causing damage], section 448 [House trespass] & seciton 504 [intentional insult with intent to provoke breach of peace] of I.P.C. In this backdrop the point for determination in this appeal is as under:-

> **"Whether the findings of acquittal as recorded by Ld. Trial Court is perverse & against the material evidence on record of Ld. Trial court ? "**

10. This court may take note of the submission of Appellant as per which attention of this court is drawn to **Ex:P-1/Complaint & Ex:P-9/Certified Copy of Sale Deed & Ex:P-10/Sale Deed dt. 4.9.2017 & oral testimony of PW:1/Amarchand [Complainant] ,PW:2/Sohanlal [Witness to Ex:P-3,Naksha-Mauka] PW:3/Bhagwanraml [Witness to Ex:P-3, Naksha-Mauka]** makes it clear that the complainant was owner in possession of disputed suit property by virtue of a regd. Sale-deed in his favour and on the disputed suit property the accused persons committed house-trespass, caused mischief, hurled abuses to complainant with the intention to cause breach of peace. Thus, the Ld. Trial court materially erred in acquitting the accused persons.

11. Ld. Counsel for private respondents no. 2 to 7 submits that the findings of Ld. Trial court is fully justified in law as the crucial witnesses viz: **PW:4/Sahdev, PW:5/Suresh, PW:6/Jagdish, PW:7/Ramniwas & PW:9/Raghunath** all of them have turned-

Hostile to the case of the Prosecution and the complainant could not prove on record of Ld. Trial court the basic & elementary ingredients of offence alleged.

12. In this backdrop, the Ld. Trial court has categorically noted that :- "**हस्तगत प्रकरण में घटनास्थल पर परिवादी का कब्जा होना भी दर्शित नहीं हुआ है। साथ ही अभियुक्तगण द्वारा परिवादी की सम्पति में रिष्टी किया जाना भी प्रमाणित नहीं हुआ है** और अभियुक्तगण द्वारा भारतीय दण्ड सहिता की धारा 504 के तहत दण्डनीय अपराध कारित किया जाना भी प्रमाणित नहीं हुआ है। **हस्तगत प्रकरण में अभियुक्तगण द्वारा बल्वा कारित करने का भी आरोप है और न्यायालय के समक्ष साक्षी पी.ड. 1 ने ऐसी कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं की है जो इस तथ्य को प्रमाणित करती हो कि अभियुक्तगण ने विधिविरूद्ध जमाव का गठन कर या उसका सदस्य होते हुए ऐसे जमाव के सामान्य आशय के अग्रसरण में बल या हिंसा का प्रयोग किया हो। ऐसी स्थिति में अभियुक्तगण के विरूद्ध बल्वा का अपराध कारित किये जाने का तथ्य भी सन्देह से परे प्रमाणित नहीं हुआ है।**"

13. Once a finding is returned by Ld. Trial court that complainant was not even found in possession of the disputed suit-property, there can be no question of any act of house-trespass, rioting or mischief even as per the testimony of PW:1/Amarchand which was duly taken note of Ld. Trial court as under:-

> "हस्तगत प्रकरण में अभियुक्तगण के विरूद्ध बलवा कारित करने, रिष्टी कारित करने, गृह अतिचार करने और परिवादी को इस आशय से गालियां निकालकर अपमानित करना कि प्रकोपन्न के परिणामस्वरूप वह अन्य अपराध कारित करे या लोक शान्ति भंग करे, कारित करने का आरोप है। **हस्तगत प्रकरण में स्वयं परिवादी / साक्षी पी.ड. 1 की प्रतिपरीक्षा के दौरान यह स्वीकृति रही है कि उसने एक मुकदमा कब्जा लेने के लिए नरसीदास पर किया था. और उक्त**

स्वीकृति इस तथ्य को स्पष्ट करती है कि कथित घटनास्थल पर परिवादी अमरचन्द का कब्जा नहीं था और उसने कब्जा प्राप्ति के लिये नरसीदास के विरूद्ध मुकदमा किया है । परिवादी द्वारा प्रस्तुत टाईपशुदा रिपोर्ट प्रदर्श पी 1 में परिवादी ने घटनास्थल वाले प्लोट में अपना सोने का काम करने वाले ऐरन, चारपाई, घरेलू बर्तन, बिस्तर और सोने के गहने बनाने के औजार रखे होने का कथन दर्ज किया है। **प्रतिपरीक्षा के दौरान स्वयं परिवादी/साक्षी पी.ड 1 की यह स्वीकृति रही है कि घटनास्थल वाले प्लोट में रहने लायक कोई मकान नहीं है और एक दुकान व साल बनी हुई है जो खण्डर हालत में है और दुकान व जौरी के टूटे-फूटे दरवाजे व बाकी प्लाट पर कुछ नहीं बना हुआ है और वह प्लोट खाली है ।** अनुसंधान के दौरान अनुसंधान अधिकारी द्वारा घटनास्थल का नक्शा मौका प्रदर्श पी 3 तैयार किया गया है, जिस पर कथित घटनास्थल के दक्षिण और परिवादी अमरचन्द का मकान दर्शाया गया है। अतः परिवादी अमरचन्द का कठित घटनास्थल के दक्षिण और पक्का मकान स्थित है तो अपने पक्के मकान से हटकर परिवादी द्वारा खण्डरनुमा स्थान पर अपने काम करने के औजार रखना, घरेलू बर्तन, बिस्तर आदि रखना हस्तगत प्रकरण में सन्देह उत्पन्न करता है, क्योंकि सामान्य प्रज्ञावान व्यक्ति का आचरण इस प्रकार का नहीं हो सकता है कि वह अपने पक्का मकान को छोड़कर खण्डस्नुमा संरचना, जिसके दरवाजे टूटे-फूटे हो. में अपने काम करने के औजार, घरेलू बर्तन, बिस्तर आदि रखे। **कथित घटनास्थल पर परिवादी की सम्पति रखी होने के संबंध में प्रदर्श पी 1 टाईपशुदा रिपोर्ट में दर्ज तथ्य व पी.ड. 1 द्वारा किये गये सशपथ कथन की सत्यता परीक्षण के उपरान्त संदिग्ध दर्शित हुए है । साथ ही नक्शा मोका प्रदर्श पी 3 में अनुसंधान अधिकारी ने स्पष्टतः व्यक्त किया है कि कथित घटनास्थल पर काफी दिनों से किसी के रहने के आलामात नजर नहीं आ रहे थे** और यह तथ्य भी घटना स्थल का उपयोग उपभोग किये जाने के तथ्य के सम्बंध में नकरात्मक तथ्य न्यायालय के समक्ष प्रकट करता है। नक्शा मौका प्रदर्श पी 3 में दर्ज उक्त तथ्य कि घटनास्थल परिवादी के कब्जे में होने और उसमें परिवादी की सम्पति रखे जाने के तथ्य को संदिग्ध बनाता है। यद्यपि नक्शा मौका प्रदर्श पी 3 में अनुसंधान अधिकारी द्वारा घटनास्थल की चारदीवारी 140 पट्टियों से बनी होने और उसमें से 7 पट्टिया तोड़ी होने का तथ्य दर्ज किया है, किन्तु अनुसंधान अधिकारी द्वारा यह

स्पष्ट ही नहीं किया गया है कि 7 पट्टियां किस स्थान से तोड़ी हुई थी। ऐसी स्थिति में पट्टियां तोड़ने के स्थान के स्पष्टीकरण के अभाव में यह तथ्य भी स्पष्ट नहीं हुआ है कि अभियुक्तगण द्वारा कथित घटनास्थल पर पट्टियां तोड़ी गई थी।”

14. This testimony of complainant had been made the basis by the Ld. Trial court to arrive at the conclusions that even the possession of the complainant was not found on disputed property wherein act of house-trespass, rioting, mischief and hurling abuses is alleged by the complainant against the accused persons.

15. This court on careful perusal of record finds that the **Ex:P-4/161 Cr.P.C. Statement of Sahdev, Ex:P-5/161 Cr.P.C. Statement of Suresh, Ex:P-6/161 Cr.P.C. Statement of jagdish Ex:P-7/161 Cr.P.C. Statement of Ramniwas & Ex:P-8/161 Cr.P.C. Statement of Raghunath** were denied by these witnesses as **PW:4/Sahdev, PW:5/Suresh,PW:6/Jagdish PW:7/Ramniwas & PW:9/Raghunath** as all these witnesses have turned-Hostile & denied their respective statements u/s. 161 Cr.P.C.

16. The mere **complaint/Ex:P-1, Ex:P-2/FIR, Ex:P-3/Naksa mauka,Ex:P-9 & Ex:P-10[sale-deeds] & oral testimony of PW:1/Amarchand** may be sufficient to constitute the elementary ingredients of offence u/s.147[Punishment for rioting], section 427[Mischief causing damage], section 448 [House trespass] & seciton 504 [intentional insult with intent to provoke breach of peace] of I.P.C. by **“Preponderance of probability”** but not **“beyond all reasonable doubts”** and thus, the distance between **“may be true” & “must be true”** has not been traveled by the state/complainant against the accused persons to bring home the charges alleged.

17. As a natural corollary of the same, the impugned judgment of acquittal dated 21.10.2019 whereby accused persons were acquitted for having committed offence u/s.147 [Punishment for rioting], section 427[Mischief causing damage], section 448 [House trespass] & section 504 I.P.C [intentional insult with intent to provoke breach of peace] as passed by the Court of Ld.Gram Nyayalaya, Jayal [Nagaur] in Case No:274/2017 titled as State of Rajasthan Vs. Narsidass etc is hereby upheld as this court finds no perversity, illegality and material irregularity in the findings so recorded by Ld. Trial Court.

18. This Appeal is accordingly dismissed. The file of Ld. Trial court be sent back with copy of this Order.

Copy of this appeal be consigned to records.

Pronounced in open court & typed by me.

13.3.2026 (Arun K Beriwal)